

इस्लाम धर्म आह्वान, सहिष्णुता और अच्छे तरीके से की जाने वाली बहस पर आधारित है।

"(ऐ नबी!) आप उन्हें अपने पालनहार के मार्ग (इस्लाम) की ओर हिकमत तथा सदुपदेश के साथ बुलाएँ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करें, जो सबसे उत्तम है। निःसंदेह आपका पालनहार उसे सबसे अधिक जानने वाला है, जो उसके मार्ग से भटक गया और वही सीधे मार्ग पर चलने वालों को भी अधिक जानने वाला है।" [90] [सूरा अल-नह्ल : 125]

पवित्र क़ुरआन अंतिम आकाशीय पुस्तक है और पैगंबर मुहम्मद अंतिम पैगंबर हैं। चुनांचे इस्लाम की अंतिम शरीयत सभी के लिए बातचीत करने और धर्म की बुनियादों और सिद्धांतों पर चर्चा करने का मार्ग खोलती है। यह सिद्धांत कि "धर्म में कोई बाध्यता नहीं है" इस्लामी धर्म के साये में संरक्षित है। वह, दूसरों के सम्मान का खयाल रखते हुए, किसी को भी सटीक एवं स्वाभाविक इस्लामी विश्वास को अपनाने पर मजबूर नहीं करता। लेकिन दूसरों को भी अपने धर्म पर बने रहने एवं अमन और सुरक्षा प्राप्त करने के बदले में इस्लामी राष्ट्र के नियमों का पालन करना है।

उदाहरण के तौर पर हम उमरी चार्टर को देख सकते हैं। उमरी चार्टर एक पत्र है, जिसे खलीफ़ा उमर बिन खत्ताब -अल्लाह उनसे राज़ी हो- ने ईलिया (फ़लस्तीन) वालों के लिए लिखा था, जब उसे मुसलमानों ने 638 ई० में फ़तह किया था। उसमें उन्होंने उनको उनके चर्चों और धन-संपत्ति की सुरक्षा प्रदान की थी। उमर पैक्ट को यरूशलम के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेजों में से एक माना जाता है।

उस में है : "शुरू अल्लाह के नाम से। यह पत्र उमर बिन खत्ताब की ओर से शहर ईलिया वालों के लिए लिखा जा रहा है। उनकी जानें, औलाद, माल एवं चर्च सुरक्षित हैं। उन्हें न गिराया जाएगा और न ही उनमें दूसरों को बसाया जाएगा।" [91] इब्न अल-बतरीक़ : "अल-तारीख़ अल-मजमू अला अल-तहक़ीक़ व अल-तसदीक़" भाग 2, पृष्ठ : 147

खलीफ़ा उमर -अल्लाह उनसे राज़ी हो- यह संधि लिखा रहे थे कि नमाज़ का समय हो गया। पैट्रिआर्क सोफ़ोनियस ने उन्हें नमाज़ के लिए क़यामत चर्च में आमंत्रित किया, जहाँ वे थे। परन्तु खलीफ़ा ने इनकार कर दिया और उनसे कहा कि मुझे डर है कि अगर मैं इस गिर्जा में नमाज़ पढ़ूँ, तो मुसलमान तुमसे यह गिर्जा ले लें और कहें कि "यहाँ ईमान वालों के खलीफ़ा ने नमाज़ अदा की है।" [92] तारीख़ अल-तबरी और मुजीरुद्दीन अल-उलैमी अल-मक़दिसी

इसी तरह इस्लाम गैर-मुस्लिमों के साथ की गई संधियों एवं वादों का सम्मान करता है और उनको पूरा करता है। परन्तु वह धोखा करने वालों एवं वचनों का उल्लंघन करने वालों पर सख्त है। साथ ही वह मुसलमानों को इन धोखेबाजों से दोस्ती करने से मना भी करता है।



